Ancestral Heritage: The Era of Change (1750–1820)

History & Our Family Origins

In the Manbhum–Topchanchi–Gomoh region, 1750 represents a quiet but important transitional period. The area was largely a forest–frontier zone with tribal and zamindari communities maintaining local authority and land traditions. The seeds of later revenue and land reforms were beginning to appear — changes that would eventually disrupt traditional tribal and agrarian systems.

By the early 1800s, the British East India Company had firmly established dominance in eastern India. The Manbhum region, which later became a distinct district, underwent several administrative changes. The 'Jungle Mehal' territories — including parts of modern-day Dhanbad, Purulia, and adjoining areas — were reorganised under British authority in the 1830s, laying the foundation for direct colonial administration.

In 1820, the great Bengali social reformer Ishwar Chandra Vidyasagar was born — a symbolic beginning of India's social awakening. This period saw the early stirrings of modern reform: efforts to end social injustices like sati, and movements promoting education and rational thought, especially in Bengal and Bihar regions. Although major legal reforms came later, the intellectual and moral awakening had begun.

For the local region (Manbhum/ Topchanchi/ Gomoh), 1820 marks the early colonial phase — a time when tribal and forest societies were gradually being integrated under Company rule. Traditional social structures and belief systems were under transformation, influenced by new administrative policies, education, and the spread of reformist ideas.

It is within this broader climate of social transition and reform that families across eastern India — including those in Manbhum, Topchanchi, and Gomoh — may have experienced significant cultural and spiritual change. *It is quite possible that our forefathers embraced Islam during this reformative era, inspired by evolving moral, spiritual, and social currents that encouraged new paths of faith and identity in or around 1750-1800 or much before 1700 AD.*

JKMSQ Family Lineage

Our Family Lineage – JKMSQ, traces back through several respected known ancestors mainly Baba Judan (b. 1820), Kangali Mian, Mohar Mian, Haji Sahadul Mian & Abdul Quayum (b. 1921), remembered as the pillar of the family during their times.

It is understood that our forefathers, sometime much before the era of Baba Judan, embraced the Islamic faith. The exact date or circumstances of this conversion are not known, but what remains clear is that our ancestral roots never shifted — the family continued to live in the same native locality, as there is no record of migration from our village Chitarpur.

The village of Chitarpur, located about 3 km from the sacred Parasnath Hills, was historically under the Zamindari (landlordship) of Raja Shakti Narayan Singh, son of Raja Ganga Narayan Singh, within the Katras Pargana, presently under Police Station – Topchanchi.

Old family records from the early 20th century indicate that Mohar Mian, son of Kangali Mian, purchased 6 Bigha 11 Kattha 15 Chhatak 1.5 Ganda of cultivating land in 1921 from the then Zamindar — a transaction that marked the family's lasting connection with its ancestral soil and heritage.

Together, these details trace a continuous thread of faith, place, and perseverance — linking the early colonial era to the modern age through our family's enduring legacy.

Legacy of Abdul Quayum and the Digital Era of the Family Tree

Abdul Quayum was the forward-looking personality of the JKMSQ family — the first man from the area to pass matriculation. He constantly envisioned the growth and progress of the family, not only through education but also through social advancement.

After India's independence and the establishment of **Sindri Fertilizer Corporation Limited (SFCL)** — inaugurated by Prime Minister Pandit Jawaharlal Nehru — he joined the company as **Estate Supervisor** and served with dedication until his retirement as **Estate Officer**. During this period, he not

only supported his father Haji Sahadul Mian, but also guided and assisted his brothers, nephews, and nieces in pursuing higher education. Many among them became **engineers, professors, educationists, doctors, and media professionals**, reflecting his enduring influence.

The contents of the original family tree were first recorded verbally by **Haji Sahadul Mian** and later compiled by Abdul Quayum. Headmaster Sikandar Hayat Ali, Haidar Ali, Yaseen Ali, and several other family members from across the locality further contributed to updating and refining it over time.

I, Mohammad Zahoor Ali, digitized this family tree by developing a computer program titled *My Family*.

The software can still be downloaded from the link below:

Download My Family app for Windows

With the advent of new technologies and the need for broader accessibility, this standalone software was later replaced by a more advanced web-based Family Tree program.

The dynamic family tree is now available online in English, Hindi, and Urdu at the following links:

- English Version TreeView
- ट्री-व्यु का हिन्दी वर्सन
- ٹری-ویئو کا انگریزی نسخہ

आबाई विरासतः तब्दीलियों का दौर (1750–1820)

इतिहास और हमारे ख़ानदान की अस्ल-ओ-इब्तिदा (Origins)

मानभूम–तोपचाँची–गोमो इलाक़े में सन 1750 एक पुर-सुकून मगर अहम् दौर की नुमाइंदगी करता है — ऐसा वक़्त जब ज़मीन और समाज दोनों बदलाव के दौर से गुज़र रहे थे। इलाक़ा ज़्यादातर जंगलात और सरहदी (फ्रंटियर) इलाक़ा था, जहाँ क़बीलाई (tribal) और ज़मींदारी बिरादरियाँ अपनी रिवायती सल्तनत और ज़मीनदारी रसमों को बरक़रार रखे हुए थीं। मालियाती (Revenue) और ज़मीनी इस्लाहात (Reforms) के बीज इसी ज़माने में बोए गए — वही तब्दीलियाँ जो आगे चलकर क़बीलाई और देहाती निज़ाम (System) को क़ायम किया।

1800 के शुरुआती सालों में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने मशरिक़ी हिन्द में अपनी पकड़ मज़बूत कर ली थी। मानभूम इलाक़ा, जो बाद में अलग ज़िला बना, कई इंतिज़ामी (Administrative) तब्दीलियों से गुज़रा। 'जंगल महल' के इलाक़े — यानी आज के धनबाद, पुरुलिया और इर्द-गिर्द के हिस्से — 1830 के क़रीब अंग्रेज़ी हुकूमत के ज़ेरे-इख़्तियार आ गए, जिससे सीधी औपनिवेशिक हुकूमत की बुनियाद रखी गई।

सन 1820 में ईश्वर चंद्र विद्यासागर की पैदाइश हुई — जो हिन्दुस्तान की समाजी बेदारी (Social awakening) के एक अलम-बरदार थे। इस दौर में इस्लाह की शुरुआती लहरें उठीं — सती जैसी नाइंसाफ़ियों को मिटाने और तालीम व तर्क को बढ़ावा देने की कोशिशें ख़ास तौर पर बंगाल और बिहार में तेज़ हुईं। हालाँकि बड़े क़ानूनी इस्लाहात बाद में आए, मगर ज़ेहन और ज़मीर की बेदारी शुरू हो चुकी थी।

मानभूम / तोपचाँची / गोमो के इलाक़े के लिए 1820 का वक़्त शुरुआती औपनिवेशिक दौर था — जब क़बीलाई और जंगलात समाज धीरे-धीरे कंपनी के क़ानून के दायरे में आने लगे। मुताअद्दिद (कई) रिवायती ढाँचे और अकीदे नई तालीम, हुकूमती नीतियों और इस्लाही ख़यालात के असर से तब्दील होने लगे।

इसी तब्दील होती हुई फ़िज़ा में मशरिक़ी हिन्दुस्तान के बहुत से ख़ानदान — जिनमें मानभूम, तोपचाँची और गोमो के लोग भी शामिल थे — ज़बरदस्त तहज़ीबी और रूहानी तब्दीलियों से गुज़रे। यक़ीनन मुमकिन है कि हमारे आबाओ-अजदाद ने इसी इस्लाही दौर में इस्लाम को अपनाया होगा — 1750 से 1800 या शायद 1700 ईस्वी से भी पहले — जब समाज में नया नज़रिया, ईमान और शनाख़्त की तहरीक चल रही थी।

JKMSQ का सिलसिला-ए-नसब

हमारी नस्ल का सिलसिला कई मुहतरम बुज़ुर्गों तक पहुँचता है — बाबा जूड़न (ज. 1820), कंगाली मियाँ, मोहर मियाँ, हाजी सहदुल मियाँ, और अब्दुल क़य्यूम (ज. 1921) — जो अपने दौर में ख़ानदान के मज़बूत स्तम्भ (Pillar) रहे।

रिवायत के मुताबिक़, हमारे बुज़ुर्गों ने बाबा जूड़न से काफ़ी पहले इस्लाम अपनाया था। हालाँकि इसका सही वक़्त और वजह मालूम नहीं, मगर यह बात वाज़ेह है कि हमारी जड़ें कभी उखड़ी नहीं — ख़ानदान हमेशा अपने आबाई गाँव चितरपुर में आबाद रहा, और हिजरत (Migration) का कोई सबूत नहीं मिलता।

चितरपुर गाँव, जो मुक़द्दस पारसनाथ पहाड़ियों से तक़रीबन 5 किलोमीटर दूर है, कभी राजा शक्ति नारायण सिंह (राजा गंगा नारायण सिंह के बेटे) की ज़मींदारी के ज़ेरे-इख़्तियार था — जो उस वक़्त कतरास परगना में आता था, और अब थाना तोपचाँची के तहत है।

20वीं सदी की शुरूआती पारिवारिक दस्तावेज़ों से पता चलता है कि मोहर मियाँ, (कंगाली मियाँ के बेटे), ने सन 1921 में उस वक़्त के ज़मींदार से 6 बीघा 11 कट्ठा 15 छठाक 1.5 गंडा खेती की ज़मीन ख़रीदी थी — यह मुआमला (Transaction) हमारे ख़ानदान के अपनी आबाई ज़मीन और विरासत से स्थायी रिश्ता जोड़ने की निशानी है। इन तमाम तफ़सीलात से एक मुसलसल रिश्ता झलकता है — ईमान, जगह और इस्तिक़ामत (Perseverance) का — जो शुरूआती औपनिवेशिक दौर से लेकर आज के आधुनिक ज़माने तक हमारी विरासत को जोड़ता है।

अब्दुल क़य्यूम की विरासत और डिजिटल दौर

अब्दुल क़य्यूम साहब JKMSQ ख़ानदान के दूरअंदेश शख़्सियत थे — इलाक़े के पहले शख़्स जिन्होंने मैट्रिकुलेशन पास किया। उन्होंने हमेशा तालीम ही नहीं, बल्कि समाजी तरक़्क़ी (Social Progress) के लिए भी ऊँची सोच रखी। हिन्दुस्तान की आज़ादी और सिंदरी फ़र्टिलाइज़र कॉर्पोरेशन लिमिटेड (SFCL) की तामीर (Establishment) — जिसे पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उद्घाटित किया — के बाद उन्होंने कम्पनी में एस्टेट सुपरवाइज़र की हैसियत से ख़िदमात अंजाम दी और बाद में एस्टेट ऑफ़िसर के तौर पर रिटायर हुए।

इस दौरान उन्होंने गाँव के अपने वालिद हाजी सहदुल मियाँ की खेती-बारी में मदद की, और अपने भाइयों, भतीजों, भांजों को तालीम हासिल करने में मदद और रहनुमाई की। उनकी रहनुमाई में कई लोग इंजीनियर, प्रोफ़ेसर, माहिरे-तालीम (Educationist), डॉक्टर और मीडिया पेशेवर बने — जो उनके असर-ओ-रसूख़ और मेहनत का सबूत हैं।

अस्ल फ़ैमिली ट्री की बातें पहले हाजी सहदुल मियाँ ने बयान कीं, जिन्हें बाद में अब्दुल क़य्यूम साहब ने सिलसिलेवार तरतीब दिया। भाई सिकंदर हयात अली, हैदर अली, यासीन अली और दूसरे ख़ानदानी अफ़राद ने इसे मुन्तज़िम (Update) कर के बेहतर बनाने में साथ दिया।

मैं, मोहम्मद ज़हूर अली, ने इस फ़ेमिली-ट्री को डिजिटाइज़ करके एक कम्प्यूटर प्रोग्राम 'My Family' के ज़रिए तैयार किया। यह सॉफ्टवेयर नीचे दिए लिंक से डाउनलोड किया जा सकता है:

Download My Family app for Windows

तकनीकी तरक़्क़ी और वसीअ दायरे की ज़रूरत को देखते हुए, इस स्टैंडअलोन सॉफ्टवेयर को बाद में एक उन्नत वेब-बेस्ड फ़ैमिली ट्री में तब्दील किया गया। अब यह डायनामिक फ़ैमिली ट्री अंग्रेज़ी, हिन्दी और उर्दू — तीनों ज़बानों में ऑनलाइन मौजूद है:

- English Version TreeView
- ट्री-व्यू का हिन्दी वर्सन
- ٹری-ویئو کا انگریزی نسخہ